कृषि नवाचार

ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 07 अक्टूबर, 2026

भारत में सब्जी उत्पादन की वर्तमान स्थिति: चुनौतियाँ एवं अवसर

अनुपम[1*]

[1]आर.एस.एम. महाविद्यालय धामपुर, बिजनौर-246761(उत्तर प्रदेश)

***E-mail: anupamshakya452@gmail.com**

भारत में सब्जी उत्पादन कृषि एवं उद्यानिकी क्षेत्र का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। सब्जियाँ मानव पोषण, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, किसानों की आय तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत विश्व में सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। देश में आलू, प्याज, टमाटर, बैंगन, फूलगोभी, पत्तागोभी, मटर, भिंडी तथा विभिन्न पत्तेदार सब्जियों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जाता है। आधुनिक कृषि तकनीकों, उन्नत किस्मों, संरक्षित खेती, सूक्ष्म सिंचाई, जैविक खेती तथा उच्च मूल्य वाली सब्जियों की बढ़ती मांग के कारण इस क्षेत्र में विकास की अपार संभावनाएँ हैं। हालांकि, जलवायु परिवर्तन, जल संसाधनों की कमी, कीट एवं रोगों का प्रकोप, गुणवत्तापूर्ण बीजों की उपलब्धता, कटाई उपरांत होने वाली हानि, भंडारण सुविधाओं का अभाव तथा बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव जैसी समस्याएँ इस क्षेत्र के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इन चुनौतियों का वैज्ञानिक समाधान अपनाकर भारत में सब्जी उत्पादन को अधिक लाभकारी, टिकाऊ एवं प्रतिस्पर्धात्मक बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्द: सब्जी उत्पादन, उद्यानिकी, खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, संरक्षित खेती, सूक्ष्म सिंचाई, मूल्य संवर्धन, सतत कृषि।

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ कृषि न केवल आजीविका का प्रमुख साधन है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था एवं खाद्य सुरक्षा का भी महत्वपूर्ण आधार है। कृषि के अंतर्गत उद्यानिकी क्षेत्र का विशेष महत्व है, जिसमें फल, सब्जियाँ, फूल, मसाले एवं औषधीय पौधों का उत्पादन शामिल है। इनमें सब्जियों का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये मानव आहार में विटामिन, खनिज लवण, आहार रेशा तथा विभिन्न जैव सक्रिय यौगिकों का प्रमुख स्रोत हैं।

भारत में विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के कारण उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय एवं समशीतोष्ण क्षेत्रों की अनेक प्रकार की सब्जियों का उत्पादन संभव है। देश के लगभग सभी राज्यों में स्थानीय जलवायु एवं बाजार की मांग के अनुसार सब्जियों की खेती की जाती है।

पिछले कुछ वर्षों में जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, जीवनशैली में परिवर्तन तथा स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण ताजी एवं गुणवत्तापूर्ण सब्जियों की मांग में लगातार वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप सब्जी उत्पादन अब केवल घरेलू उपभोग तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह किसानों के लिए व्यावसायिक आय एवं रोजगार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है।

भारत में सब्जी उत्पादन की वर्तमान स्थिति

भारत विश्व में चीन के बाद सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। देश में विभिन्न प्रकार की सब्जियों का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा जून 2026 में जारी वर्ष 2025-26 के द्वितीय अग्रिम अनुमानों के अनुसार:

- वर्ष 2024-25 में भारत में सब्जियों का उत्पादन लगभग 2177.97 लाख टन रहा।
- वर्ष 2025-26 में सब्जियों का उत्पादन लगभग 2210.00 लाख टन अनुमानित किया गया है।
- वर्ष 2024-25 में सब्जियों की खेती का क्षेत्रफल लगभग 117.91 लाख हेक्टेयर था।
- वर्ष 2025-26 में यह क्षेत्रफल बढ़कर लगभग 118.79 लाख हेक्टेयर होने का अनुमान है।

ये आँकड़े भारत में सब्जी उत्पादन की बढ़ती क्षमता एवं इस क्षेत्र के आर्थिक महत्व को दर्शाते हैं।

भारत में सब्जी उत्पादन का महत्व

पोषण सुरक्षा: सब्जियाँ विटामिन A, B, C, K, कैल्शियम, आयरन, पोटैशियम तथा आहार रेशे का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। संतुलित आहार में सब्जियों का नियमित सेवन आवश्यक है।

किसानों की आय में वृद्धि: सब्जियाँ सामान्यतः कम अवधि में तैयार होने वाली फसलें हैं। उचित प्रबंधन एवं बाजार व्यवस्था के माध्यम से किसान कम समय में अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

रोजगार सृजन: सब्जी उत्पादन में नर्सरी तैयार करने, रोपाई, सिंचाई, निराई-गुड़ाई, कटाई, ग्रेडिंग, पैकेजिंग एवं विपणन जैसी गतिविधियों में रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध होते हैं।

फसल विविधीकरण: सब्जियों की खेती अपनाकर किसान पारंपरिक खाद्यान्न फसलों पर निर्भरता कम कर सकते हैं तथा फसल चक्र एवं बहुफसली प्रणाली को बढ़ावा दे सकते हैं।

औद्योगिक महत्व: टमाटर, आलू, मटर, प्याज एवं अन्य सब्जियों का उपयोग प्रसंस्करण उद्योग में सॉस, प्यूरी, चिप्स, फ्रोजन

सब्जियाँ, निर्जलित उत्पाद तथा अन्य मूल्य संवर्धित उत्पाद बनाने में किया जाता है।

भारत में सब्जी उत्पादन की प्रमुख चुनौतियाँ

भारत में सब्जी उत्पादन की अपार संभावनाएँ होने के बावजूद किसानों को अनेक तकनीकी, आर्थिक एवं पर्यावरणीय समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन सब्जी उत्पादन के लिए एक गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा, ओलावृष्टि एवं अत्यधिक गर्मी का प्रभाव फसल की वृद्धि, पुष्पन, फलन तथा उत्पादन पर पड़ता है। विशेष रूप से टमाटर, फूलगोभी, पत्तागोभी एवं मटर जैसी फसलें प्रतिकूल तापमान के प्रति संवेदनशील होती हैं।

गुणवत्तापूर्ण बीजों की कमी: कई क्षेत्रों में किसानों को उन्नत, रोगमुक्त एवं प्रमाणित बीज समय पर उपलब्ध नहीं हो पाते। घटिया गुणवत्ता वाले बीजों के कारण अंकुरण, पौधों की वृद्धि एवं उपज प्रभावित होती है।

कीट एवं रोगों का प्रकोप: सब्जियों में विभिन्न प्रकार के कीट एवं रोग उत्पादन को प्रभावित करते हैं।

सिंचाई एवं जल प्रबंधन की समस्या: सब्जियों की अधिकांश फसलों को उचित समय पर पर्याप्त मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। भूजल स्तर में गिरावट एवं सिंचाई जल की अनुपलब्धता उत्पादन को प्रभावित करती है।

कटाई उपरांत हानि: सब्जियाँ अत्यधिक नाशवान कृषि उत्पाद हैं। अनुचित कटाई, खराब पैकेजिंग, परिवहन में देरी तथा कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं की कमी के कारण उत्पादन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा खराब हो जाता है।

बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव: सब्जियों की कीमतों में अचानक वृद्धि एवं गिरावट किसानों के लिए आर्थिक अनिश्चितता पैदा करती है। कभी-कभी अधिक उत्पादन होने पर किसानों को अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता।

छोटे एवं सीमांत जोत: भारत में अधिकांश किसानों के पास सीमित कृषि भूमि है। इसके कारण आधुनिक मशीनरी, संरक्षित खेती एवं बड़े पैमाने पर व्यावसायिक उत्पादन अपनाने में कठिनाई होती है।

रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का असंतुलित प्रयोग: असंतुलित उर्वरक प्रयोग, अत्यधिक कीटनाशक उपयोग एवं मृदा स्वास्थ्य की अनदेखी से उत्पादन लागत बढ़ती है। इसके साथ ही पर्यावरण एवं खाद्य सुरक्षा पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।।

भारत में सब्जी उत्पादन के प्रमुख अवसर

वर्तमान समय में तकनीकी विकास, बाजार विस्तार एवं उपभोक्ताओं की बदलती मांग ने सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में अनेक नए अवसर पैदा किए हैं।

संरक्षित खेती: पॉलीहाउस, ग्रीनहाउस, शेडनेट हाउस एवं लो-टनल तकनीक के माध्यम से प्रतिकूल मौसम में भी गुणवत्तापूर्ण सब्जियों का उत्पादन किया जा सकता है।

ड्रिप एवं फर्टिगेशन तकनीक: ड्रिप सिंचाई के माध्यम से पौधों की जड़ों के पास आवश्यकतानुसार पानी पहुँचाया जाता है। फर्टिगेशन द्वारा जल में घुलनशील उर्वरकों को सिंचाई के साथ दिया जा सकता है। इससे जल एवं उर्वरकों की उपयोग दक्षता बढ़ती है तथा फसल की वृद्धि और उत्पादन में सुधार की संभावना रहती है।

हाईब्रिड एवं उन्नत किस्मों का विकास: उच्च उपज देने वाली, रोग प्रतिरोधी, जलवायु अनुकूल एवं बेहतर गुणवत्ता वाली किस्मों के विकास से सब्जी उत्पादन को नई दिशा मिल सकती है। विशेष रूप से ताप सहनशील, विषाणु रोग प्रतिरोधी एवं कम अवधि में तैयार होने वाली किस्मों की मांग बढ़ रही है।

जैविक एवं प्राकृतिक खेती: जैविक खाद, कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, जैव उर्वरक, जैव कीटनाशक एवं जैव नियंत्रण एजेंटों के उपयोग से टिकाऊ सब्जी उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे मृदा स्वास्थ्य में सुधार तथा रासायनिक इनपुट पर निर्भरता कम करने में सहायता मिलती है।

माइक्रोन्यूट्रिएंट एवं बायोस्टिमुलेंट का उपयोग: जिंक, आयरन, बोरॉन एवं मैंगनीज जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व पौधों की वृद्धि, प्रकाश संश्लेषण, पुष्पन एवं उपज निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी प्रकार समुद्री शैवाल अर्क, ह्यूमिक एसिड, अमीनो एसिड एवं अन्य पादप बायोस्टिमुलेंट का वैज्ञानिक उपयोग पौधों की वृद्धि एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रति सहनशीलता बढ़ाने में सहायक हो सकता है। हालांकि, इनका प्रयोग फसल, सांद्रता, समय एवं स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार वैज्ञानिक अनुशंसा के आधार पर करना चाहिए।

हाई-टेक नर्सरी उत्पादन: स्वस्थ एवं रोगमुक्त पौध तैयार करना सफल सब्जी उत्पादन की पहली आवश्यकता है। प्रो-ट्रे, कोकोपीट, नियंत्रित वातावरण तथा ग्राफ्टिंग तकनीक के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण पौध उत्पादन किया जा सकता है।

खाद्य प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन: टमाटर से प्यूरी एवं सॉस, आलू से चिप्स, मटर से फ्रोजन उत्पाद तथा प्याज एवं लहसुन से निर्जलित उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। इससे किसानों को बाजार के विभिन्न विकल्प मिलते हैं तथा कटाई उपरांत होने वाली हानि को कम करने में मदद मिलती है।

डिजिटल कृषि एवं आधुनिक तकनीक: ड्रोन, सेंसर, मोबाइल एप्लीकेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा रिमोट सेंसिंग जैसी तकनीकों के माध्यम से फसल की निगरानी, रोग पहचान, सिंचाई प्रबंधन एवं बाजार संबंधी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।।

निष्कर्ष

भारत में सब्जी उत्पादन का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। बढ़ती जनसंख्या, पोषण संबंधी आवश्यकताओं, शहरीकरण तथा गुणवत्तापूर्ण खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग के कारण सब्जी उत्पादन का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। देश ने सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन जलवायु परिवर्तन, उत्पादन लागत, कीट एवं रोग, कटाई उपरांत हानि तथा विपणन संबंधी समस्याएँ अभी भी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इन समस्याओं का समाधान आधुनिक कृषि तकनीकों, संरक्षित खेती, सूक्ष्म सिंचाई, उन्नत किस्मों, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन, जैविक संसाधनों एवं बेहतर बाजार व्यवस्था के माध्यम से किया जा सकता है।